पाठ-1

यूरोपीय शक्तियों का भारत में आगमन

व्यापारिक मार्ग

प्राचीन काल से ही भारत का विदेशों से सम्पर्क रहा है। 16वीं शताब्दी से भारत से व्यापार करने के लिए यूरोपीय शक्तियों ने भारत आना प्रारम्भ किया जिसमें पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और ब्रिटिश प्रमुख थीं। भारत और यूरोप के मध्य व्यापार, जल और थल द्वारा होता था। इन मार्गों की संख्या तीन थी।

प्रथम मार्ग फारस की खाड़ी से होता हुआ समुद्री मार्ग था। इस मार्ग से इराक, तुर्की, वेनिस और जिनेवा से व्यापार होता था। दूसरा मार्ग लाल सागर से अलेक्जेंडरिया का था जहाँ से समुद्र द्वारा वेनिस और जिनेवा को जाया जाता था। तीसरा मार्ग मध्य एशिया से मिस्र और फिर यूरोप के लिए था

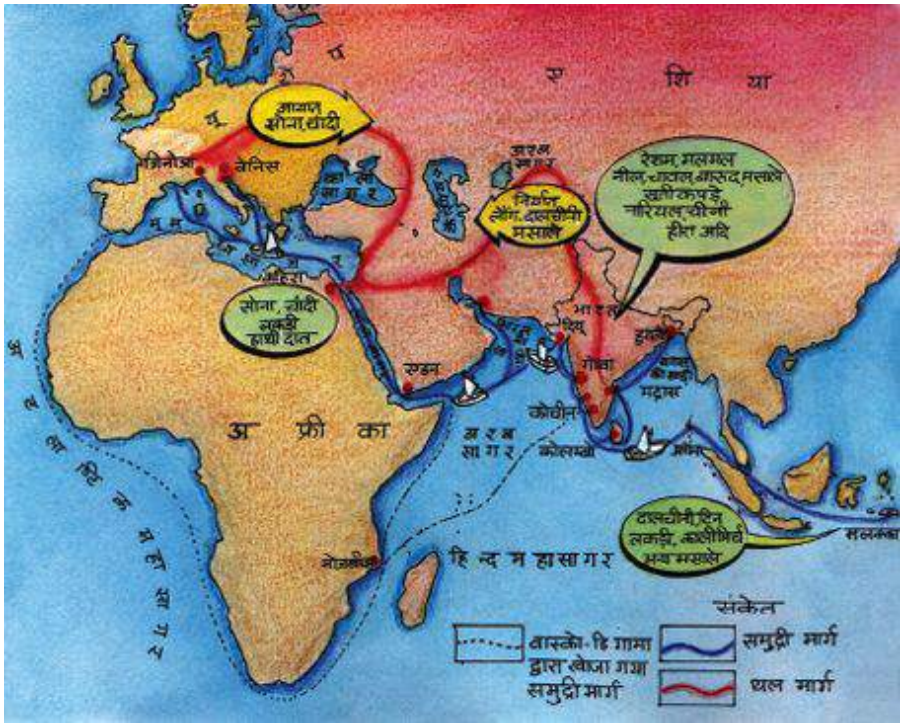

इस प्रकार से यूरोप के सभी क्षेत्रों में भारत की वस्तुओं के वितरण के लिए वेनिस और जिनेवा प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे। इटली ने भारत की प्रमुख वस्तुओं के व्यापार पर अपना एकाधिकार जमाए रखने के लिए यूरोप की शक्तियों की व्यापार में हिस्सेदारी को रोक दिया।

पंद्रहवीं शताब्दी (1453 ई0) में कुस्तुनतुनियाँ पर तुर्कों ने अपना अधिकार कर लिया। अब तुर्कों ने यूरोप और भारत के मध्य पुराने सभी संचार के माध्यमों को बंद कर दिया। कुस्तुनतुनियाँ नगर व्यापार मार्ग का मुख्य द्वार था। अतः व्यापार के लिए यूरोप के व्यापारियों को कुस्तुनतुनियाँ नगर पार करना ही पड़ता था। लेकिन तुर्कों द्वारा मार्ग पर कब्जा होने के कारण यूरोप और भारत के मध्य व्यापार को बहुत धक्का लगा।

समुद्री मार्ग की खोज

अब यूरोपवासियों ने व्यापार के लिए नये समुद्री मार्ग की खोज करना आरम्भ कर दिया। इन जगहों की खोज मात्र सम्भावनाओं के आधार पर थी, इसलिए कुछ नाविकों ने यूरोप के उभरते राज्यों के महत्वाकांक्षी राजाओं व रानियों को धन, धर्म और ध्वज के सपने दिखाये।

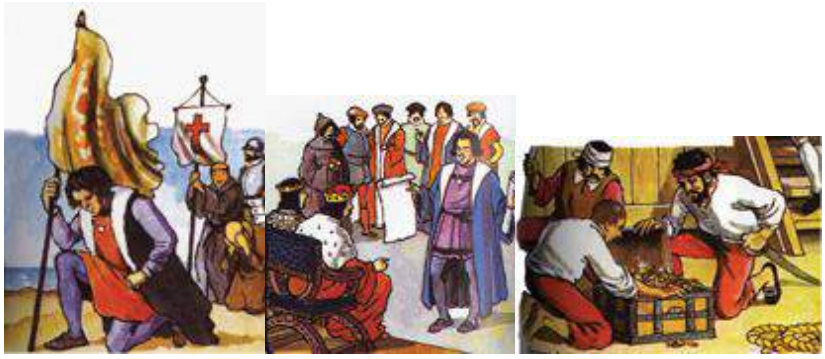

धन- राज्य की आमदनी के लिए खजाना इकट्ठा करना- कीमती धातु सोना, चाँदी आदि व मसालों के फायदेमंद व्यापार से कर एकत्रित करने की संभावना थी।

धर्म-ईसाई धर्म का दूर-दराज इलाकों में प्रचार करना।

ध्वज- यूरोप के राष्ट्रों का झण्डा दूर-दूर के उपनिवेशों पर फहराए जिससे उनका साम्राज्य बढ़ेगा।

कुतुबनुमा

यूरोप के राजाओं ने इन नाविकों की समुद्री यात्राओं का खर्चा वहन किया।

इनके नाविकों ने कुतुबनुमा की सहायता से रास्तों की खोज में लम्बी समुद्री यात्राएँ कीं। कुतुबनुमा के द्वारा दिशाओं का ज्ञान होता है। भारत की खोज में निकले स्पेन निवासी कोलम्बस ने अमेरिका की खोज की तथा पुर्तगाल निवासी वास्कोडिगामा अपनी लम्बी जलयात्रा के दौरान अफ्रीका के दक्षिणी छोर से होते हुए भारत के पश्चिमी समुद्र तट के कालीकट बंदरगाह पर पहुँच गया। अब पुर्तगालियों को हिन्द महासागर होते हुए पूर्वी द्वीप समूह का नया जलमार्ग मिल गया। अब यूरोप और भारत के मध्य व्यापार पुनः आरम्भ हो गए।

यूरोपीय व्यापार

पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर के माध्यम से होने वाले व्यापार पर अपना अधिकार कर लिया। वे सोना-चाँदी लाते और हमारे देश से सूती-रेशमी कपड़े और विभिन्न मसाले ले जाते थे और बहुत मुनाफा कमाते थे। पुर्तगाल की मजबूत नौसेना के कारण हिन्द महासागर से कोई दूसरा देश पुर्तगाल की इजाज़त के बिना अपना जहाज नहीं ले जा सकता था। वास्कोडिगामा के भारत पहुँचने के बाद एक-एक करके हालैण्ड, फ्रांस और इंग्लैण्ड के व्यापारी भारत आने लगे।

भारत में यूरोपीय व्यापारियों की होड़

व्यापार के लिए धन, लम्बी यात्रा करने वाले जहाज तथा नाविक तीनों साधनों का बहुत ही महत्व था। इन साधनों को प्राप्त करने के लिए कुछ अमीर यूरोपीय व्यापारियों ने सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत में (1600-1670ई0) के बीच व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित कीं। व्यापारिक कम्पनियों का अर्थ है- व्यापार में कई लोगों की हिस्सेदारी (शेयर) होती थी। सभी हिस्सेदार व्यापार में अपनी-अपनी पूँजी लगाते थे। लगायी गयी पूँजी के अनुपात में व्यापार से प्राप्त मुनाफे को आपस में बाँट लेते थे। हालैण्ड में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी, इंग्लैण्ड में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी बनीं और फ्रांस में फ्रेंच ईस्ट इण्डिया कम्पनी बनी। आज भी निजी कम्पनियाँ इसी प्रकार पूँजी इकट्ठा करती हैं।

व्यापारिक केन्द्र: फोर्ट विलियम, कोलकाता

भारत में सबसे पहले पुर्तगाली व्यापार करने आये। उन्होंने पश्चिमी समुद्र तट पर गोवा, दमन द्वीव में अपने व्यापारिक केन्द्र स्थापित किये। विदेशी कम्पनियों के इन व्यापारिक केन्द्रों को कोठी (फैक्ट्री) कहा जाता था।

फैक्ट्री (कोठी)- फैक्ट्री शब्द का प्रयोग व्यापारिक केन्द्रों में स्थापित कार्यालय अथवा कोठी से है। 'फैक्टर' शब्द का अर्थ एजेन्ट है। कम्पनी की ओर से कार्य करने वाले व्यापारी (एजेन्ट) जिस कोठी में कार्य करते थे उसे फैक्ट्री कहा जाता था। यूरोपियों की बस्तियों के लिये भी सैनिक रखे जाते थे। कोठियों की रक्षा किलों की तरह होती थी और इन किलों की सुरक्षा के लिये यूरोपीय व्यापारियों के सशस्त्र सैनिक तैनात रहते थे।

वास्कोडिगामा के भारत पहुँचने के बाद एक-एक करके हालैण्ड, इंग्लैण्ड और फ्रांस के व्यापारी जल के रास्ते भारत आने लगे। इस समय तक हिन्दुस्तान के

तो किसी भी शासक ने नौसेना तैयार करने की बात सोची तक नहीं।

हालैण्ड निवासियों ने, जो डच कहलाते हैं, कालीकट, कोचीन, नागापट्टम तथा चिनसूरा में व्यापारिक केन्द्र खोले। फ्रांसीसियों ने मछलीपट्टम, पाण्डिचेरी, चन्द्रनगर, माही स्थानों में अपने व्यापार के मुख्य केन्द्र बनाये। अंग्रेजों ने अपने को केवल समुद्र तट तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि सूरत, कैम्बे, अहमदाबाद, आगरा, भड़ौच, पटना, कासिम बाजार स्थानों पर व्यापारिक केन्द्र बनाये।

भारत में, यूरोप के सभी देशों के व्यापारी, पुर्तगालियों के हाथ से व्यापार छीनने की होड़ में लगे रहते थे। उनकी कोशिश रहती थी कि वे भारत में कम से कम कीमत देकर सामान खरीद सकें, फिर वे इस सामान को यूरोप में अधिक से अधिक दाम पर बेच कर खूब मुनाफा कमा सकें। उन्होंने पाया कि सूरत, मसूलीपटनम (मछलीपट्टम) जैसे बड़े बन्दरगाहों पर जो सामान व्यापारियों द्वारा बिकने लाया जाता है, वह महँगा मिलता है। इसलिए यूरोप के व्यापारी गाँव-गाँव में अपना आदमी या एजेन्ट भेज कर सीधे कारीगरों से माल खरीदने की कोशिश में रहते ताकि सस्ता माल मिले।

समय के साथ पुर्तगाली नौसेना और किलों की ताकत अंग्रेज, डच और फ्रांसीसियों से कई मुकाबलों के कारण कमजोर पड़ गई। कुछ समय तक किसी एक का भारत के व्यापार पर

अधिकार नहीं जम सका।

विदेशी कम्पनियों ने व्यापार में लाभ के लिए साम, दाम, दण्ड व भेद के तरीके अपनाये।

उन्होने बादशाहों व राजाओं के पास अपने-अपने प्रतिनिधि या दूत भेजे और भारत में खुलकर व्यापार करने की इजाजत माँगी। अनुमति प्राप्त करने के लिए ये खुशामद भी किया करते थे फलस्वरूप राजाओं ने अधिकार पत्र 'फरमान' जारी किए।

व्यापारियों के दूतों ने कुछ करों को न देने की छूट माँगी।

इसके बदले में उन्होने बादशाहों व राजाओं को नवीन वस्तुएँ भेंट कीं।

सर टॉमस रो ने जहाँगीर के दरबार की शान-शौकत देखी, तो उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सस्ती व खराब चीजें मुगल बादशाह को न देने की हिदायत दी। उसने सम्राट को अंग्रेजी

दस्ताने दिए और इंग्लैण्ड में इस्तेमाल की जाने वाली बग्घी दी, जिससे जहाँगीर प्रसन्न हुआ।

बग्घी

राजाओं के मन में यह आशा थी कि उनके राज्य का खजाना बढ़ेगा तथा करों में छूट देने से उनके राज्य में ज्यादा व्यापार आकर्षित होगा, और राज्य खूब फलेगा-फूलेगा। इससे और अधिक कर मिलेगा।

हिन्दुस्तान के राजाओं के मन में यूरोपीय व्यापारियों की तरफ से मिलने वाली धमकी का असर भी था। पुर्तगाली नौसेना का मुकाबला दूसरे यूरोपीय देशों की सशक्त नौ सेनाएँ ही कर सकती थीं और हिन्दुस्तान के जहाजों को पुर्तगालियों के खतरे से सुरक्षा की जरूरत थी।

उपरोक्त मानचित्र के आधार पर अंग्रेज, फ्रेंच, पुर्तगाल, डच के फैक्ट्रियों की सूची बनाओ।

अंग्रेज, फ्रांसीसी व डच कहते, ”व्यापार की छूट दोगे तभी हम हिन्दुस्तानी जहाजों की सुरक्षा की गारण्टी देंगे, नहीं तो मौका मिलने पर उन्हें लूटा व डुबोया जाएगा।“

इन नीतियों व स्थितियों का फायदा उठाकर यूरोप के व्यापारियों ने हिन्दुस्तान में व्यापार से खूब लाभ कमाया। उन्हें कई कर (टैक्स) न देने की छूट मिली, जमीन खरीद कर उन्होंने अपने गोदाम, घर, बन्दरगाह बनाए और अपने-अपने किले भी बनाए।

और भी जानिए

यूरोपियों द्वारा मसालों का प्रयोग स्वाद के लिए ही नहीं बल्कि माँस को सड़ने से बचाने के लिए भी किया जाता था, जिससे माँस कई महीनों तक सुरक्षित रह सके।

पुर्तगाल, इंग्लैण्ड, फ्रांस, हालैण्ड आदि यूरोपीय देशों का क्षेत्रफल, जनसंख्या व संसाधन भारत के एक प्रांत उत्तर प्रदेश के क्षेत्रफल, जनसंख्या व संसाधनों की तुलना में कम है। ये देश भारत से हजारों किमी की दूरी पर हैं। इन सबके बावजूद भारत इनसे हारा।

जिस समय यूरोपीय देशों में तकनीकी विकास जैसे घड़ी, छपाई के लिए प्रेस, तोप एवं बंदूक आदि बनाए जा रहे थे उस समय हमारे देश के शासक इनसे अनभिज्ञ व अपरिचित थे।

धनी व्यापारियों ने पैसा उधार देने के लिए बैंक की स्थापना की। इसके लिए वे शुल्क लेते थे जिसे ब्याज कहते थे। लोग अपना धन बैंकों में सुरक्षित रखते थे। पहला बैंक इटलीवासियों का था। सत्रहवीं शताब्दी में लंदन तथा अमेस्टर्डम बैंक व्यवस्था वाले सबसे महत्वपूर्ण बने।

आज यूरोप के समस्त देश यूरोपियन यूनियन में संगठित हो गये हैं और आर्थिक रूप से एक शक्ति के रूप में उभरकर आ रहे हैं।

घड़ी

अभ्यास

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) अमेरिका की खोज की थी-

(क) कोलम्बस ने (ख) हॉकिन्स ने

(ग) वास्कोडिगामा ने (घ) सर टॉमस रो ने

(2) भारत में सर्वप्रथम कौन सा यूरोपीय व्यापारी आया-

(क) अंग्रेज (ख) पुर्तगाली

(ग) फ्रांसीसी (घ) डच

2. अतिलघु उŸारीय प्रश्न -

(1) किस यन्त्र के आविष्कार से लम्बी समुद्री यात्राएँ आसान हो गई ?

(2) वास्कोडिगामा किस देश का निवासी था ?

(3) मुगल बादशाह जहाँगीर के दरबार में आने वाला प्रथम अंग्रेज राजदूत कौन था ?

3. लघु उŸारीय प्रश्न -

(1) भारत और यूरोप के मध्य होने वाले व्यापारिक मार्गों के बारे में लिखिए ।

(2) व्यापारिक कंपनी से आप क्या समझते हो ?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

(1) पुराने यूरोपीय व्यापारिक मार्ग कौन से थे ? नये व्यापारिक मार्गों की खोज क्यों शुरू हुई ?

प्रोजेक्ट वर्क

5. निम्नलिखित सूची बनाइए-

(1) भारत से व्यापार करने वाले देशों के नाम।

(2) भारत के उन स्थानों के नाम जहां पर विदेशियों ने अपनी व्यापारिक कोठियां बनाई।

(3) वे वस्तुएं जिन्हें विदेशी व्यापारी भारत से अपने देश ले जाते थे।

6. संसार के मानचित्र में उन मार्गों को दिखाइए, जिसके द्वारा विदेशी भारत में व्यापार करने के लिए आए।